

## देश को जोड़ती हुई पूर्वोत्तर की हिंदी

- सूर्यप्रकाश

भाषा किसी समाज की अस्मिता का प्रतीक होती है। भाषा भावों और विचारों को प्रकट करने का एक मात्र उत्कृष्ट साधन है। भाषा ही किसी समाज को मूर्त रूप प्रदान करती है भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिए हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है। किसी भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतिनिधि स्वर एक व्यवस्था में मिलकर एक सम्पूर्ण भाषा की अवधारणा बनाते हैं। हम जब भाषा का अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि एक निश्चित भूखण्ड में भी बोलने वालों की भाषा में अंतर पाया जाता है।

'तीन कोस पर पानी बदले

चार कोस पर बानी।'

इस तरह की उक्ति भाषा के संदर्भ में सुनने को मिलती है। समाज में भाषा के चलन पर गौर करें तो देखते हैं कि भाषाई ध्वनियों, संकेतों, प्रतीकों के आधार पर कुछ न कुछ समानता मिल ही जाती है। दुनिया में समाज अपनी भाषा, बोली, क्षेत्रीयता रंग रूप में वैविध्य रखते हुए भी भेदरहित है।

"दुनिया भर की भाषाओं, संस्कृतियों और कई अनुभवों में यदि भिन्नता के साथ समानता के भी कुछ तत्व हैं, तो इसका अर्थ है किसी भी भाषा की कोई एक सीमित पारिवारिक विरासत नहीं है। हर भाषा की एक मिश्रित बहुभाषाई विरासत है।"

मनुष्य जाति ने भाषा का प्रयोग भावों को प्रकट करने के लिए ही किया। अपने अनुभवों को प्रकट करने के लिए जिन भाषाई तत्वों का प्रयोग किया वह आज समूचे विश्व में फैला हुआ है।

"मनुष्य जाति जहाँ जहाँ थी, इसने विश्व के अपने अनुभवों को मूलतः भाषा की ध्वनियों में ही प्राप्त किया था। भाषा की ध्वनियों के साथ ये अनुभव एक दिशा से दूसरी दिशा में और कई दिशाओं में गए। एक जगह की संस्कृति दूसरी जगह गई।

पूर्वोत्तर भारत जिसका कालांतर में प्राग्ज्योतिषपुर (पूर्वोत्तर का सांस्कृतिक नाम) नाम है। अपनी वैविध्यपूर्ण संरचना में यह क्षेत्र विविधता लिए हुए सांस्कृतिक संपन्न रहा है। इस क्षेत्र का अवलोकन ही ऐतिहासिक है।

"ज्ञान की सरणी का ब्रह्मपुत्र पार करना ही ऐतिहासिक है। ब्रह्मपुत्र महाबाहु है। महाबाहु का मतलब है बड़ी भुजाओं वाला, शक्तिशाली और बलवान।"

पूर्वोत्तर भारत का जो मूल्य बोध है वह भारतीयता का समन्वयक है। पूर्वोत्तर भारत अपनी संस्कृति अपने उत्सव- त्यौहारों में भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं को ही संचालित करता है।

"पूर्वोत्तर भारत की जनजातियों के मूल्य-बोध भौगोलिक रूप से इस एक जैसे ईशान क्षेत्र में भारतीयता को जोड़ने वाला मूल्य बोध है। सिक्किम से लेकर अरुणाचल तक और नागालैण्ड से लेकर त्रिपुरा तक अनेकानेक भाषाओं, बोलियों, समुदायों, नृत्य-संगीत, वनस्पतियाँ, वन्यजीवों, पारिस्थितिक विविधताओं, लोक-संस्कृतियों और रीति-रिवाजों को जीता हुआ यह प्रदेश मूलतः उत्सव धर्मी है। इसका टोन और टनर फेस्टिवल है।"

यह क्षेत्र अनेकों संभावनाओं से परिपूर्ण है। इस क्षेत्र का अवलोकन अत्यंत आवश्यक है। यदि भारतीयता को समझना है उसके होने के कारणों को जानना है तो इस क्षेत्र में कई अनुसंधान की आवश्यकता है।

भारतवर्ष में पूर्वोत्तर भारत ऐसा क्षेत्र है, जहाँ पर सर्वाधिक भाषिक एवं सांस्कृतिक विविधता है। समस्त भारतवर्ष में ऐसा दूसरा भाग नहीं है, जहाँ पर इतनी अधिक भाषिक एवं सांस्कृतिक विविधता हो। यही कारण है कि पूर्वोत्तर भारत में भाषा एवं सांस्कृतिक अनुसंधान एवं इन भाषिक एवं सांस्कृतिक पहचान को स्थापित करने की असीम संभावनाएँ हैं।

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी के उत्स की खोज करें तो पाते हैं कि यहाँ कथाओं, पुराणों के माध्यम से हिंदी का परिचय मिलता है। पूर्वोत्तर भारत में पौराणिक, आध्यात्मिक, एवं दैविक पूजा पद्धतियों का समुच्चय है। यहाँ सूरज, चांद आदि को दैवीय स्वरूप की संकल्पना के पीछे बहुत से आख्यान हैं। पूर्वोत्तर अपनी पूजा पद्धति में भी विशिष्ट है। यहाँ सत्र, नामघर, समानता की कसौटी तैयार करते हैं।

महाभारत में नाग जाति तथा ऐसी कुछ जातियों का उल्लेख है, जो उत्तर-पूर्वी भारत की थी। यह मिथ है, इसे इतिहास नहीं कहा जा सकता, लेकिन उत्तर पूर्व के भारत का शेष क्षेत्रों से एक पुराना सांस्कृतिक सम्बन्ध है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता।

पूर्वोत्तर भारत में भारतीय बोध के तत्त्व पहले से ही विद्यमान थे परंतु भाषा के आगमन से यहाँ के लोगों को भारत के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में संपर्क करना अत्यंत सरलता पूर्वक संभव हो सका।

पूर्वोत्तर भारत के अनेक राज्य हिंदी को केन्द्र सरकार की प्रतिनिधि भाषा समझते थे किंतु आज की स्थिति में पूर्वोत्तर भारत में कोई भी प्रदेश ऐसा नहीं रह गया है जहाँ के लोग हिंदी न समझते हों। इसलिए हिंदी को वाचिक तथा लिखित भाषा के रूप में समझने के लिए प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है।

"रवींद्रनाथ ठाकुर ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के स्थापना समारोह में भाषण देते हुए कहा था कि "कली की एकता ही एकता नहीं होती खिले फूल की एकता में एकता होती है।"

पूर्वोत्तर में हिंदी का औपचारिक रूप से प्रवेश 1934ई. में हुआ, जब महात्मा गांधी जी अखिल भारतीय हरिजन सभा की स्थापना हेतु असम आए थे। उस समय गढ़मूह (माजुली) के सत्राधिकार (धर्मगुरु) एवं

स्वतन्त्रता सेनानी पीताम्बर देव गोस्वामी के आग्रह पर गांधी जी ने बाबा राघवदास को हिंदी प्रचारक के रूप में असम भेजा। 1938ई. में असम हिंदी प्रचार समिति की स्थापना गुवाहाटी में हुई। यह समिति आगे चलकर असम राष्ट्र भाषा प्रचार समिति बनी। आम लोगों में हिंदी भाषा तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार करने हेतु- प्रबोध, विशारद, प्रवीण आदि परीक्षाओं का आयोजन इस समिति के द्वारा होता आ रहा है। जिस क्षेत्र को पूर्वोत्तर भारत के नाम से जाना जाता है उसमें असम सबसे बड़ा प्रदेश है। उसके बाद सिक्किम, नागालैण्ड, अरुणाचलप्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय, मणिपुर और मिजोरम शामिल हैं। इस क्षेत्र में अनेक जनजातियाँ हैं तथा उनकी अलग-अलग भाषाएँ हैं और अनेक बोलियाँ हैं। इनमें बोडो, कछारी, जयंतियाँ, कोच, गारो, देउरी, रियांग, लापुंग, मिजो, खासी जामातिया, कार्बी, मिसिंग, निशी आपातानी इत्यादि महत्वपूर्ण हैं।

खुद हिंदी एक बहुभाषाई विरासत से बनी भाषा है। इसका कोई एक स्रोत नहीं माना जा सकता। हिंदी को संस्कृत से एक बड़ी विरासत हासिल हुई है, हिंदी एक विविधतापूर्ण विशाल क्षेत्र की साझी निर्मिति है। हम पौराणिक दुर्गा की निर्मिति से इस प्रक्रिया को थोड़ा बहुत समझ सकते हैं। दुर्गा को बहुत से देवताओं ने अपने अस्त्र शस्त्र देकर एक शक्ति के रूप में पैदा किया, हिंदी भी इसी तरह अस्तित्व में आई।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में कई भाषा परिवार हैं विभिन्न देशों की सीमाओं से सटे होने के कारण यह क्षेत्र उन देशों की भाषा से प्रभावित हो जाता है। अनायास ही अन्य भाषा परिवार का इनकी भाषा से जुड़ाव हो जाता है। इस क्षेत्र में भारतीय- आर्यन परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं।

उत्तर- पूर्वी भारत के असम, मणिपुर और त्रिपुरा में मुख्य रूप से भारतीय आर्य परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। यह एक महत्वपूर्ण बात है कि भारत के उत्तरी पूर्वी हिस्से में जितनी भाषाई सांस्कृतिक विविधता है, भारत के किसी क्षेत्र में नहीं है।

भारतीय परंपरा को समेटने का कार्य हिंदी ने किया है। यह परंपराएँ बोलियों के माध्यम से हिंदी से एक सूत्रता में जुड़ जाती है। लोकभाषाएँ हिंदी को समृद्ध बनाने का काम करती हैं। इसलिए विभिन्न बोलियाँ मिलकर हिंदी का निर्माण करती हैं।

संस्कृत ही नहीं भारत में कई अन्य भाषाएँ और लोकभाषाएँ भी प्राचीन काल से रही हैं। भारत कई महान परंपराओं वाला पुराना देश है। उन परंपराओं को समेटते हुए हिंदी धीरे-धीरे एक महत्वपूर्ण संपर्क भाषा के रूप में विकसित हुई है। हिंदी 'व्यापक संपर्क भाषा' के रूप में

अभी भी लगातार विकसित हो रही है। हम यह उत्तर- पूर्व के लोगों की बातचीत में भी देख सकते हैं। निश्चय ही हिंदी को अन्य भारत की भाषाओं पर विजय पाकर या उनका स्थान छीनकर विकसित नहीं होना है बल्कि साथ-साथ विकसित होना है। जिससे हिंदी एक दिन उत्तर पूर्व की 'व्यापक संपर्क भाषा' के रूप में भी अधिक स्वीकृति पाएगी। यदि यह समझने की कोशिश हो कि तिब्बती- बर्मी भाषा परिवार की

भारतीय भाषाओं का संस्कृत की ध्वनियों से तथा एकदम भिन्न जान पड़ने वाली कई दूसरी भारतीय भाषाओं से गहरा सम्बन्ध है।

यदि हिंदी को और भी समृद्ध रूप में भारतीय देखना चाहते हैं तो भाषा एवं बोली के विवाद समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि यह बोली और भाषा की पृथकता की जो मांग करते हैं यह हिंदी को कमजोर रूप में देखने की संकल्पना है।

दो भारतीय भाषाओं के बीच सिर्फ भेद खोजने से बाज आना चाहिए। निश्चय ही भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों की भाषाओं को पहले दृढ़ता से सभी स्तरों पर भारतीय भाषाएँ कहने की जरूरत है। फिर यह अनुसंधान करने की जरूरत है कि संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं से इसके सम्बन्ध के वस्तुतः कौन से प्रमुख भाषा वैज्ञानिक सूत्र हैं।

ठीक इसी रूप में पूर्वोत्तर की भाषा के साथ भी किया जाता है वहाँ भी कई लोग सीधे सीधे यह साबित करने पर लगे हैं कि पूर्वोत्तर भाषाएँ हिंदी से सम्बन्धित न होकर बल्कि अन्य विदेशी भाषाओं से सम्बन्धित हैं। इस तरह वहाँ की जनता को गुमराह करने का प्रयास किया जाता है परंतु वह लोग अब हिंदी की ताकत को समझने लगे हैं।

पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं के कुछ कट्टरवादी विद्वान पृथकता दिखाने के लिए तिब्बती बर्मी परिवार की भाषाओं पर आर्य द्रविड़ भाषाओं का प्रभाव अस्वीकार करते हैं और कई बार मणिपुरी को भी 'तिब्बती बर्मी' से जोड़ देते हैं। भाषा विज्ञान राजनीति का जितना अधिक अखाड़ा बनेगा, उसे वैज्ञानिकता से उतना हाथ धोना पड़ेगा। इस पृष्ठभूमि में यदि उत्तर- पूर्वी राज्यों की भारतीय भाषाओं के संस्कृति और अन्य भारतीय भाषाओं से सम्बन्ध का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन शुरू किया जाए और इस काम के दौरान उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की भाषाओं के भाषावैज्ञानिक अंतर्सम्बन्ध की भी वस्तुपरक जाँच पड़ताल हो तो इससे एक नई जमीन टूटेगी और चौंकानेवाले निष्कर्ष आएँगे।

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी को जानने वाले और बोलने वालों की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। यहाँ के लोग हिंदी भाषा में अपनी परंपराओं का समावेश देखते हैं। हिंदी भाषा वर्तमान समय में पूर्वोत्तर की आवश्यकता बन चुकी है। पूर्वोत्तर भारत के लोगों को अन्य भाषी लोगों से संपर्क करने लिए हिंदी और अंग्रेजी इन दो भाषाओं में किसी एक का चयन करना होता था परंतु पूर्वोत्तर के लोग अब अंग्रेजी भाषा और पश्चिम की सभ्यता संस्कृति को छोड़ हिंदी का दामन पकड़ने लगे हैं। उन्हें हिंदी भाषा में अपनी परंपरा के सुरक्षित बचे रहने की संभावना दिखाई देती है।

आठ राज्यों के विभिन्न लोगों को आपस में संपर्क करने के लिए अंग्रेजी का या हिंदी का प्रयोग करना पड़ता है, किंतु कम शिक्षित समुदाय के लोग हिंदी का ही प्रयोग करते हैं

यहाँ के (पूर्वोत्तर भारत) कई विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए पूर्वोत्तर भारत के बाहर जाना पड़ता है। उन लोगों को बाहर के राज्यों के व्यक्तियों से संपर्क करने के लिए हिंदी भाषा अर्जित करना जरूरी हो जाता है।

भारत के उत्तर-पूर्व की भाषाओं का संस्कृत से भाषावैज्ञानिक सम्बन्ध प्राचीन काल से है और उनका सम्बन्ध हिंदी से भी है। उदाहरण के तौर पर नागालैण्ड की आम बोलचाल की भाषा नागामीज में हिंदी के शब्दों का धड़ल्ले से प्रवेश हुआ है। इसमें मौसम, प्रार्थना, अंग आदि कई शब्द नागामीज में हैं। हिंदी फिल्मों और गानों ने भारतीय भाषाओं की संरचना को खासकर बोलचाल के स्तर पर बहुत प्रभावित किया है।

उपनिवेशी विद्वानों ने सदा से ही पूर्वोत्तर के लोगों की भाषा को हिंदी से पृथक दिखाने के कई प्रयास किए जो लगातार जारी भी हैं।

"हमारे ज्ञानियों के समाज में शुरू से ही फर्क और पृथकता का अध्ययन औपनिवेशिक असर के कारण लोकप्रिय ज्यादा रहा है। भाषावैज्ञानिक क्षेत्र में व्यतिरेकी अध्ययन जितने हुए हैं. सादृश्यमूलक अध्ययन उसकी तुलना में काफी कम हैं। इससे यह झलकता है कि भारतीय भाषाओं के बीच भेद दिखाने वाले अध्ययन के मामले में उपनिवेशवादी सोच के विद्वानों ने बड़ी कर्मठता का परिचय दिया है पर सम्बन्ध दिखाने के मामले में भारतीय विद्वानों ने भाषाविज्ञान की शक्ति का बहुत थोड़ा इस्तेमाल किया है। यह स्थिति जितनी चिंताजनक है, उतनी ही चुनौतीपूर्ण भी है। भारतीय भाषा वैज्ञानिक इस चुनौती को स्वीकार कर भारत के उत्तर- पूर्व की भाषाओं में एवं अन्य भारतीय भाषाओं में समानता देखने का प्रयास करें, तो आज अलगाव की भयावह स्थिति से उबरा जा सकता है।"

हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए मिजोरम में शैक्षणिक संस्थानों में अत्यधिक कार्य किए जा रहे हैं। केंद्रीय सरकार एवं राज्य सरकार दोनों ही इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। क्योंकि यहाँ के लोग अब हिंदी की आवश्यकता महसूस करने लगे हैं।

बड़े हर्ष की बात है, कि पिछले साल 2010 से मिजोरम के विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना की गई है, जिसके लिए मिजोड समुदाय कई वर्षों से बाट जोह रहा था। वे जानने लगे हैं कि हिंदी के बिना व्यापार करना, व्यक्तित्व में निखार लाना, साहित्यिक रसास्वादन, अपने को भारतीय अनुभव करना तथा नवीन संस्कृति के प्रति जातकारी पाना असंभव है। राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी भाषा को जानना जरूरी है, हिंदी के प्रति रूझान देखते हुए हिंदी स्पोकैन क्लास खुल गए हैं. जहाँ हजारों लोग बोलचाल की भाषा सीखकर बेझिझक हिंदी बोलने लगे हैं।

किसी भी भाषा को प्रचार-प्रसार के माध्यम से उसके प्रचलन में वृद्धि की जा सकती है इस पर पूर्वोत्तर के स्थानीय लोगों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देना प्रारंभ कर दिया है। इसका सकारात्मक परिणाम भी पूर्वोत्तर के लोगों ने महसूस किया।

प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में स्थानीय लोगों की भागीदारी होनी चाहिए। यह देखा गया है कि जब से स्थानीय लोग अपने बच्चों को हिंदी पढ़ाने लगे हैं, लोगों के विचार बदल रहे हैं। एक दिन ऐसा भी था कि कई कारणों से लोगों के मन में हिंदी के प्रति सकारात्मक भाव नहीं था। इसलिए हिंदी प्रचार-प्रसार में सही रूप में लोगों की आकांक्षा, रुचि एवं माहौल का ध्यान रखते हुए आगे बढ़ने की जरूरत है। पूर्वोत्तर भारत में हिंदी प्राचीन काल से प्रचलन में रही है। भारतीय बोध हिंदी के रूप में समग्र देश में फैला है। पूर्वोत्तर भारत के संस्कार में हिंदी स्थित है। आज पूर्वोत्तर अपनी आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, धार्मिक परिस्थिति में हिंदी को संभावना के रूप में देख रहा है। इसलिए पूर्वोत्तर के लोगों को हिंदी आकर्षित कर रही है। क्योंकि हिंदी ही ऐसी भाषा है जो विभिन्न बोलियों व परंपराओं को अभिव्यक्त करने का कार्य कर रही है।

सूर्यप्रकाश

एम्. फिल. शोधार्थी

हिंदी विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय